CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

# *भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता - क्षेत्रीय एवं वैश्विक प्रभाव*

**राजश्री स्वामी**
*शोधार्थी*
*राजकीय महाविद्यालय श्रीडूंगरगढ़*
**हंसा चौधरी**
*शोध निर्देशिका*
*राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर*
*Email-rajshreeswamirao@gmail.com, Mobile -8619632126*

*First draft received: 05.10.2025, Reviewed: 18.10.20*,
*Final proof received: 21.10.2025, Accepted: 28.10.2025*

**सारांश**

*भारत और चीन एशिया की दो प्राचीन सभ्यताएँ तथा आधुनिक विश्व की उभरती महाशक्तियाँ हैं। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक संपर्क, आर्थिक सहयोग और राजनीतिक संवाद के बावजूद सीमा विवाद, सामरिक प्रतिस्पर्धा और भू राजनीतिक तनाव निरंतर बढ़ते रहे हैं। यह प्रतिद्वन्द्विता केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि दक्षिण एशिया, हिंद प्रशांत क्षेत्र और वैश्विक शक्ति संतुलन पर गहरा प्रभाव डालती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत चीन संबंधों के ऐतिहासिक विकास, क्षेत्रीय प्रभाव, दक्षिण एशियाई देशों पर पड़ने वाले परिणाम, आर्थिक सामरिक प्रतिस्पर्धा तथा वैश्विक राजनीति में इसके निहितार्थों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता आने वाले दशकों में एशिया और विश्व की भू-राजनीति को निर्णायक रूप से प्रभावित करेगी।*

**मुख्य शब्द**: *भारत, चीन, आर्थिक सहयोग, राजनीतिक संवाद, हिंद प्रशांत क्षेत्र*

## प्रस्तावना

भारत और चीन के संबंध हजारों वर्षों पुराने हैं। प्राचीन काल में रेशम मार्ग के माध्यम से व्यापारिक संपर्क स्थापित हुए, बौद्ध धर्म भारत से चीन पहुँचा, और फाह्यान तथा ह्वेनसांग जैसे चीनी यात्रियों ने भारत आकर यहाँ की संस्कृति, शिक्षा और समाज का गहन अध्ययन किया। इन ऐतिहासिक संबंधों ने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक निकटता को मजबूत किया।

औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश नीतियों ने भारत चीन सीमा विवाद की नींव रखी। मैकमोहन रेखा जैसे विवादास्पद समझौतों ने हिमालयी क्षेत्र में स्थायी तनाव पैदा किया। स्वतंत्रता के बाद पंचशील समझौता (1954) ने मैत्रीपूर्ण संबंधों को नई दिशा दी, परंतु तिब्बत मुद्दे और 1962 के युद्ध ने द्विपक्षीय विश्वास को गहरा आघात पहुँचाया।

1962 के युद्ध के बाद दोनों देशों के बीच अविश्वास की गहरी खाई बन गई। 1976 में राजनयिक वार्ता पुनः शुरू हुई और 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा ने संबंधों में सुधार की नई शुरुआत की। इसके बाद 1993, 1996 और 2003 में सीमा संबंधी समझौते हुए, जिनका उद्देश्य सीमा पर शांति बनाए रखना और विश्वास निर्माण करना था।

21वीं सदी में भारत चीन संबंधों में सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। आर्थिक रूप से दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा है, परंतु यह असंतुलित है। सामरिक रूप से चीन की बढ़ती शक्ति, पाकिस्तान के साथ उसकी साझेदारी, हिंद महासागर में उसकी उपस्थिति और दक्षिण एशिया में उसका प्रभाव भारत के लिए गंभीर चुनौती बन गया है। डोकलाम (2017) और गलवान (2020) जैसी घटनाएँ दर्शाती हैं कि सीमा विवाद आज दोनों देशों के बीच अविश्वास का प्रमुख कारण है।

भारत चीन संबंध आज बहुआयामी, जटिल और निरंतर परिवर्तित होने वाले हैं, जिनमें सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष और संवादकृचारों तत्व एक साथ मौजूद हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन संबंधों के क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है।

## भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता के क्षेत्रीय प्रभाव

भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता दक्षिण एशिया के भू राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित करती है। यह प्रतिद्वन्द्विता केवल दो देशों के बीच शक्ति संतुलन का संघर्ष नहीं है, बल्कि पूरे उपमहाद्वीप की राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक विकास, सामरिक सुरक्षा और सामाजिक सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित करने वाला व्यापक भू राजनीतिक परिवर्तन है।

चीन ने पिछले दो दशकों में दक्षिण एशिया में जिस तीव्रता से अपनी आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक उपस्थिति बढ़ाई है, उसने भारत की पारंपरिक नेतृत्व भूमिका को चुनौती दी है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (ठत्प्) इस परिवर्तन का सबसे बड़ा आधार है। इस परियोजना के माध्यम से चीन दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशों में बुनियादी ढांचे, ऊर्जा, परिवहन और औद्योगिक विकास में भारी निवेश कर रहा है। श्रीलंका में हम्बनटोटा बंदरगाह, पाकिस्तान में ग्वादर पोर्ट, बांग्लादेश में चिटगांव और पायरा बंदरगाह, मालदीव में माले पोर्ट विस्तार, और नेपाल में ट्रांस हिमालयी कनेक्टिविटी परियोजनाएँ चीन की दीर्घकालिक रणनीतिक सोच का हिस्सा हैं।

इन परियोजनाओं के माध्यम से चीन न केवल आर्थिक प्रभाव बढ़ा रहा है, बल्कि समुद्री और स्थलीय मार्गों पर अपनी पकड़ मजबूत कर रहा है, जिससे भारत की सुरक्षा और सामरिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है। हिंद महासागर में चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति भारत के लिए विशेष चिंता का विषय है। चीन ने पिछले वर्षों में हिंद महासागर क्षेत्र में कई सैन्य और अर्ध सैन्य सुविधाएँ विकसित की हैं, जिनमें श्रीलंका, पाकिस्तान और मालदीव के बंदरगाहों का उपयोग शामिल है। यह उपस्थिति भारत की समुद्री सुरक्षा, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और हिंद महासागर में उसकी पारंपरिक प्रभुत्व स्थिति को चुनौती देती है।

भारत की ऊर्जा आपूर्ति, जो मुख्यतः समुद्री मार्गों से होकर गुजरती है, चीन की इस रणनीति से प्रभावित हो सकती है। चीन की ष्स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सष् रणनीति का उद्देश्य हिंद महासागर में भारत को घेरना और अपनी समुद्री शक्ति को बढ़ाना है। यह रणनीति भारत की समुद्री सुरक्षा और हिंद महासागर में उसकी भूमिका को कमजोर कर सकती है।

चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (ब्व्ब्) भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता का सबसे संवेदनशील पहलू है। यह परियोजना पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरती है, जिसे भारत अपनी संप्रभुता का उल्लंघन मानता है। ब्व्ब् के माध्यम से चीन पाकिस्तान में सड़क, रेल, ऊर्जा और औद्योगिक परियोजनाओं का विशाल नेटवर्क बना रहा है। इससे पाकिस्तान की आर्थिक निर्भरता चीन पर बढ़ती जा रही है और दोनों देशों की सामरिक साझेदारी और मजबूत होती जा रही है।

ग्वादर बंदरगाह का संभावित सैन्य उपयोग भारत की सुरक्षा चिंताओं को और गहरा करता है। पाकिस्तान और चीन की सामरिक साझेदारी भारत की सुरक्षा नीति को सीधे प्रभावित करती है। यह साझेदारी भारत के लिए दो मोर्चे की चुनौती पैदा करती हैकृएक ओर चीन और दूसरी ओर पाकिस्तान।

दक्षिण एशिया के अन्य देशों पर भी चीन का प्रभाव तेजी से बढ़ा है। नेपाल में चीन ने सड़क, रेलवे, ऊर्जा और औद्योगिक परियोजनाओं में भारी निवेश किया है। इससे नेपाल की विदेश नीति में चीन का प्रभाव बढ़ा है और भारत नेपाल संबंधों में कई बार तनाव उत्पन्न हुआ है। नेपाल की राजनीतिक पार्टियाँ भी चीन के प्रभाव में विभाजित होती हैं, जिससे भारत की पारंपरिक भूमिका कमजोर होती जा रही है।

श्रीलंका में चीन की आर्थिक उपस्थिति ने देश की संप्रभुता पर भी प्रभाव डाला है। हम्बनटोटा बंदरगाह को 99 वर्षों की लीज पर चीन को देना चीन की ऋण जाल कूटनीति का प्रमुख उदाहरण माना जाता है। श्रीलंका की आर्थिक निर्भरता चीन पर बढ़ती जा रही है, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएँ भी बढ़ी हैं।

बांग्लादेश में चीन रेलवे, पावर प्लांट और औद्योगिक परियोजनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चीन बांग्लादेश का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन चुका है, जिससे भारत बांग्लादेश संबंधों पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

मालदीव में चीन ने बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ शुरू की हैं, जिससे भारत मालदीव संबंधों में उतार चढ़ाव देखने को मिलता है। मालदीव की राजनीतिक अस्थिरता में चीन की भूमिका अक्सर चर्चा में रहती है।

इन सभी गतिविधियों का संयुक्त प्रभाव यह है कि दक्षिण एशिया में भारत की पारंपरिक नेतृत्व भूमिका कमजोर होती जा रही है और चीन एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उभर रहा है।

## वैश्विक प्रभाव

वैश्विक स्तर पर भी भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स, ैब्ब् और ळ 20 जैसे मंचों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अमेरिका चीन प्रतिद्वन्द्विता में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में फन्।क् की सक्रियता चीन की विस्तारवादी नीतियों के जवाब के रूप में देखी जाती है।

आर्थिक वैश्वीकरण पर भी भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता का प्रभाव स्पष्ट है। दोनों देशों की प्रतिस्पर्धा विश्व बाजार में नए आर्थिक गठजोड़ों को जन्म देती है। तकनीकी क्षेत्र में चीन की बढ़त भारत के लिए चुनौती है। सुरक्षा और सामरिक व्यवस्था में भी यह प्रतिद्वन्द्विता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एशिया प्रशांत में सैन्य संतुलन लगातार बदल रहा है। चीन की नौसैनिक शक्ति में वृद्धि भारत की समुद्री रणनीति को प्रभावित करती है। साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रतिस्पर्धा वैश्विक सुरक्षा ढांचे को नया रूप दे रही है।

इन सभी पहलुओं को देखते हुए यह स्पष्ट है कि भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता केवल दो देशों के बीच शक्ति संघर्ष नहीं है, बल्कि यह पूरे एशिया और विश्व राजनीति को प्रभावित करने वाला व्यापक भू राजनीतिक परिवर्तन है।

## निष्कर्ष

भारत चीन संबंध बहुआयामी, जटिल और निरंतर परिवर्तित होने वाले हैं। ऐतिहासिक संपर्क और आर्थिक सहयोग के बावजूद सीमा विवाद, सामरिक प्रतिस्पर्धा और क्षेत्रीय प्रभाव की होड़ दोनों देशों के बीच अविश्वास को बढ़ाती है। दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती सक्रियता भारत की पारंपरिक नेतृत्व भूमिका को चुनौती देती है। वैश्विक मंचों पर दोनों देशों की प्रतिस्पर्धा विश्व राजनीति में नए शक्ति संतुलन को जन्म दे रही है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी कूटनीति, आर्थिक नीति, सुरक्षा रणनीति और क्षेत्रीय साझेदारियों को और अधिक सुदृढ़ करे। संवाद, सहयोग और संतुलित

प्रतिस्पर्धा ही इस जटिल संबंध को स्थिरता की ओर ले जा सकती है।

**संदर्भ**

1. **दृष्टि IAS टीम (2025).** भारत चीन संबंध एवं क्षेत्रीय प्रभाव. दृष्टि पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

**2. दृष्टि CUET संपादकीय (2024).** भारत चीन संबंध - ऐतिहासिक एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य।

**3. विजन IAS संपादकीय (2025).** एशियाई भू राजनीति और भारत चीन प्रतिद्वन्द्विता।

**4. बायजूस संपादकीय टीम (2023).** India China Relations: Strategic and Economic Dimensions.

**5. पाट्रिका (2025).**CPEC और दक्षिण एशिया की भू राजनीति।

**6. टाइम्स ऑफ इंडिया (2023).** China's Influence in South Asia..

**7. गुप्ता, आर. (2021).**South Asian Geopolitics and China's Expanding Role.

**8. विकिपीडिया योगदानकर्ता (2005).** India China Relations: Historical Overview.

**9. डॉ. टी. सी. राव (2025**). भारत चीन सीमा विवाद का विश्लेषण।